



श्री प्राणनाथ जी वाणी

॥ प्रेम खोल देवे सब द्वार ॥



रुहों की रहनी

आठ प्रहर

मैं पेहले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब।
पर एक फैल रेहेनीय का, लिया न सिर पर तब॥



श्री प्राणनाथ जी वाणी

॥ प्रेम खोल देवे सब द्वार ॥



श्री प्राणनाथ जी वाणी सेवा परिवार

धाम धनी जी की मेहर से महामति श्री लालदास जी रचित श्री बीतक साहेब
एवं प्यारे सतगुर श्री राजन स्वामी जी कृत टीका का आधार लेकर हमारे
प्यारे सुंदरसाथ जी द्वारा लेखन की अति सुंदर प्रेमपूर्ण सेवा की गयी है।

लेखन की सेवा – श्रीमती सुप्रभा अटोड़ा जी (जालंधर)

टाइपिंग की सेवा - श्री मुकेश त्यागी जी (गाजियाबाद)

प्रूफ रीडिंग की सेवा - श्रीमती किरण खुराना जी (कनाडा)

आप सभी निष्पार्थ, अथक व निरंतर **सेवाभावी सुंदरसाथ जी** के चरणों में
कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी!



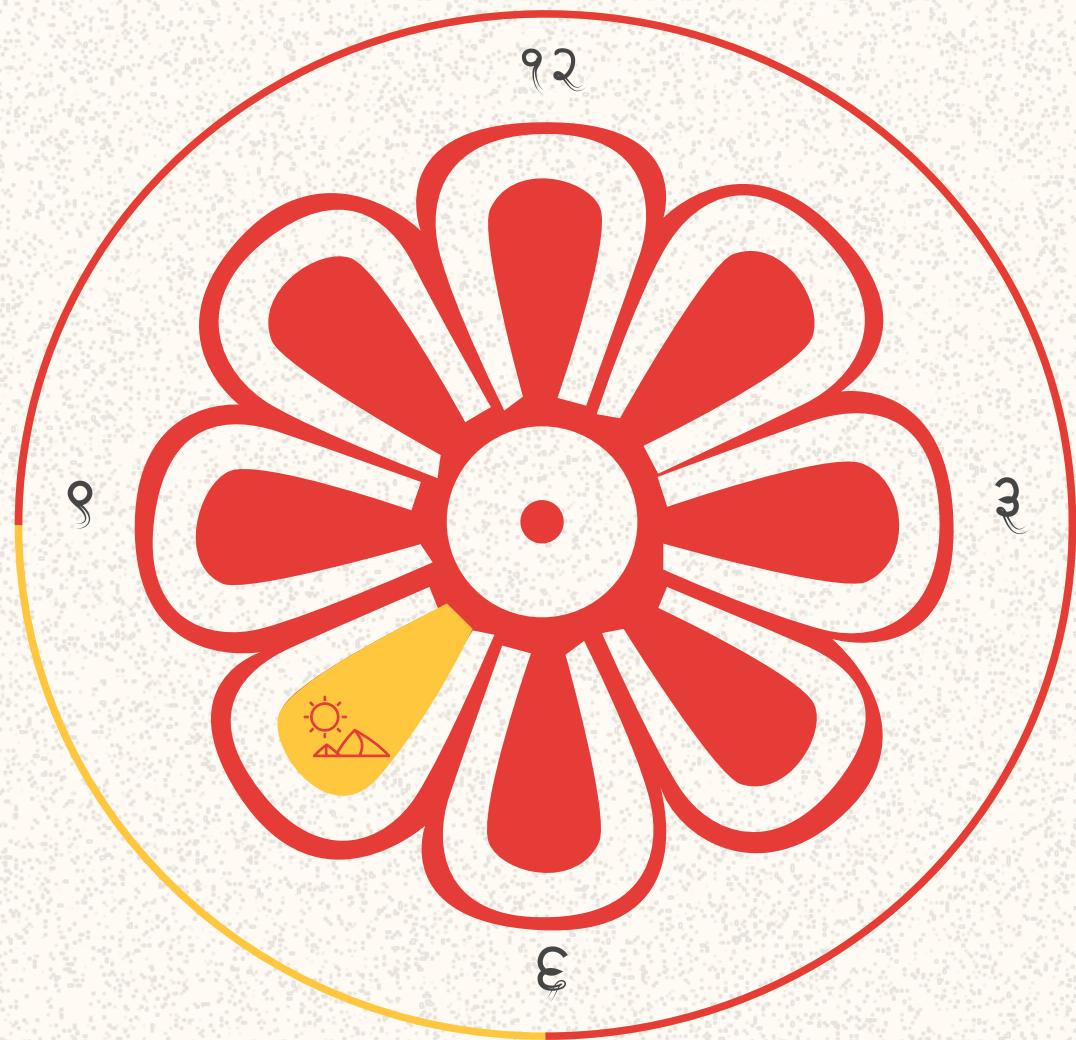
हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप हमें अपनी ईमानदार प्रतिक्रिया दें।

आपकी चरण-रज,
श्री प्राणनाथ जी वाणी परिवार



पहला प्रहर

(6 बजे से 9 बजे तक)



अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अस्ति नजर॥



★ पहला प्रहर (6 बजे से 9 बजे तक)

श्री प्राणनाथ जी की शैख्या का लाल पलंग, पांच रंग की निवाड़, कोमल

गद्दा, पतली चादर, गाल मसुरिये, ऋतु के अनुसार ओढ़ने की चादर, रजाई।

ऋतु के अनुसार जल पिलाना, चरण दबाने की सेवा, सर्दी की ऋतु में अंगीठी

लगाना, गुनगुने जल में ढमाल भिगोकर नेत्रों को पोंछने के लिए देना, वस्त्र

पहनाने की सेवा, शीतकाल में सूथनी, सिर पर गोटा और कन्धप्पी, चरणों में

मोजे, कस वाला कुर्ता, पटुका, दो ऊनी शालें, श्रृंगार करवाना, कहीं जाना

तो पांवड़े की सेवा, सुन्दरसाथ की सेवा के लिए भी मौसम के अनुसार जल

और दातुन, श्रीजी के लिए सूरजमुखी, मोरछल, छत्र, चरण कमल धोना,

कंचन से मढ़ा दातुन, श्री जी का हाथ धोना और चरणामृत बांटा जाना। इत्र

और तेल की मालिश, स्नान के पश्चात् ललाट पर केसर मिश्रित चन्दन का

तिलक स्वयं लगाना। सुपारी, इलायची, जावित्री, जायफल मिलाकर फुलमा

देना, हरड़ देना, एक सुन्दरसाथ जी का दर्पण लेकर खड़े रहना, पाग में

चन्द्रिका में मोतियों की लटें, गुदड़ी, सुमरनी, चिप्पी, सेली, छड़ी तथा माला श्री

जी को देना। श्रृंगार के आभूषण चाँदी के थाल में ढक कर लाना। गले में दो

मोतियों की माला, सोने की दो जंजीरें इनमें लॉकेट, एक छोटी जंजीर, एक

बड़ी जंजीर, नौ लड़ियों वाला हाट, तीन लड़ियों वाला हाट, एक लड़ी की

मोतियों की मोटी माला, अंगुलियों में मुन्दरियां, प्रातः काल का हल्का

आहार, जल की सेवा, सुन्दरसाथ के घर जाना, खड़ाऊं पहनाना, छत्र लेकर

चलना, पांवड़े बिछाना, धनी जी का हाथ पकड़ कर उठाना और बैठाना, पिया

जी को हँसाने की सेवा, श्री जी का हँस-हँस कर बातें करना और सुन्दर साथ

को हँसाना, जिस सुन्दरसाथ की इच्छा हो कि आज मेरे घर आएं तो पिया जी

सब की इच्छा पूर्ण करते। “धाम धनी की जय” बोलने की सेवा, हर समय

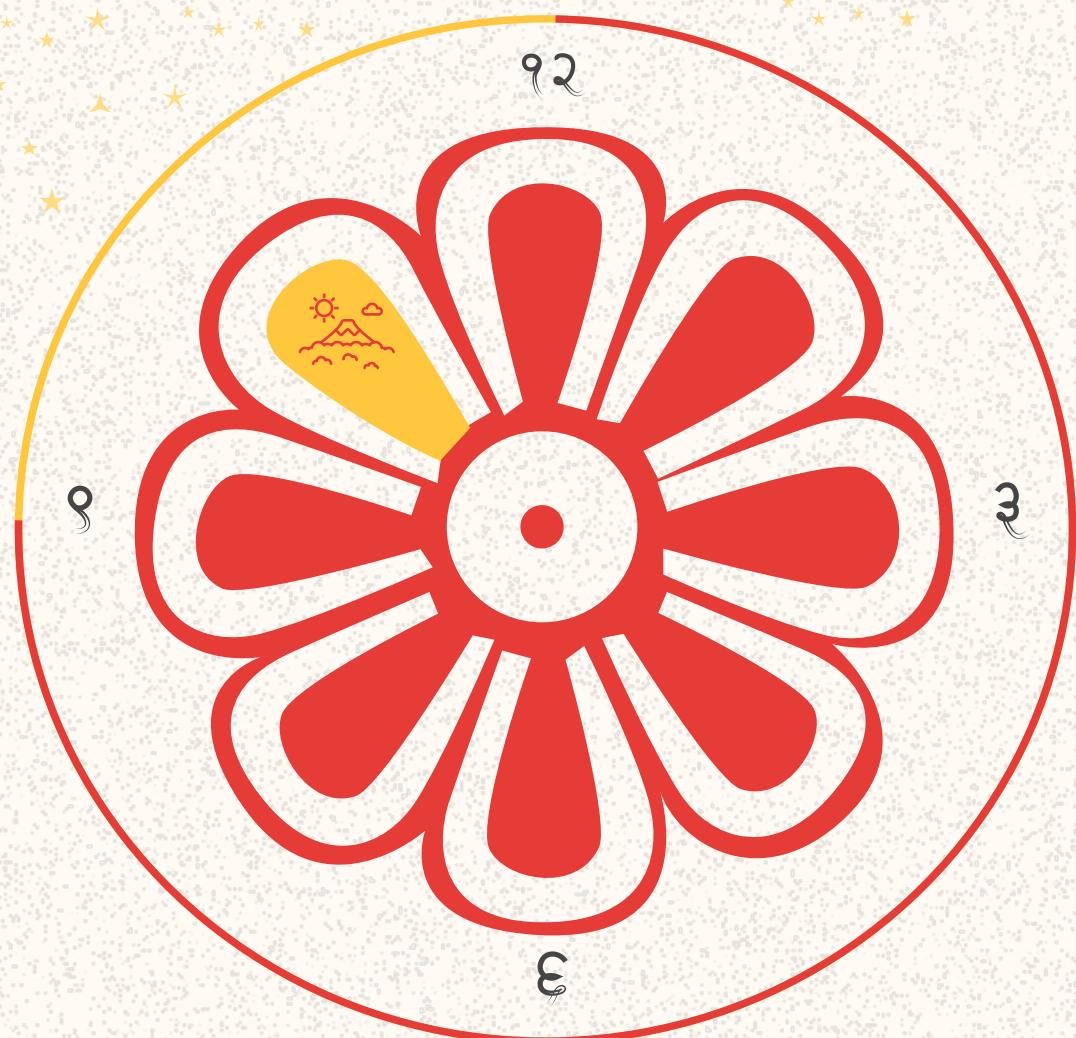
मोरछल लेकर साथ चलना, चंकर डुलाना। अब नौ बजने वाले हों तो बंगलाजी

में पलंग पर बैठाना।

मेरी रहनी (6 बजे से 9 बजे तक)

दूसरा प्रहर

(9 बजे से 12 बजे तक)



अब समय आया रेहेनीय का, ऊट फैल को चाहे।
जो होवे असल अर्स की, सो फैल ले हाल देखाए॥



दूसरा प्रह्ल (9 बजे से 12 बजे तक)

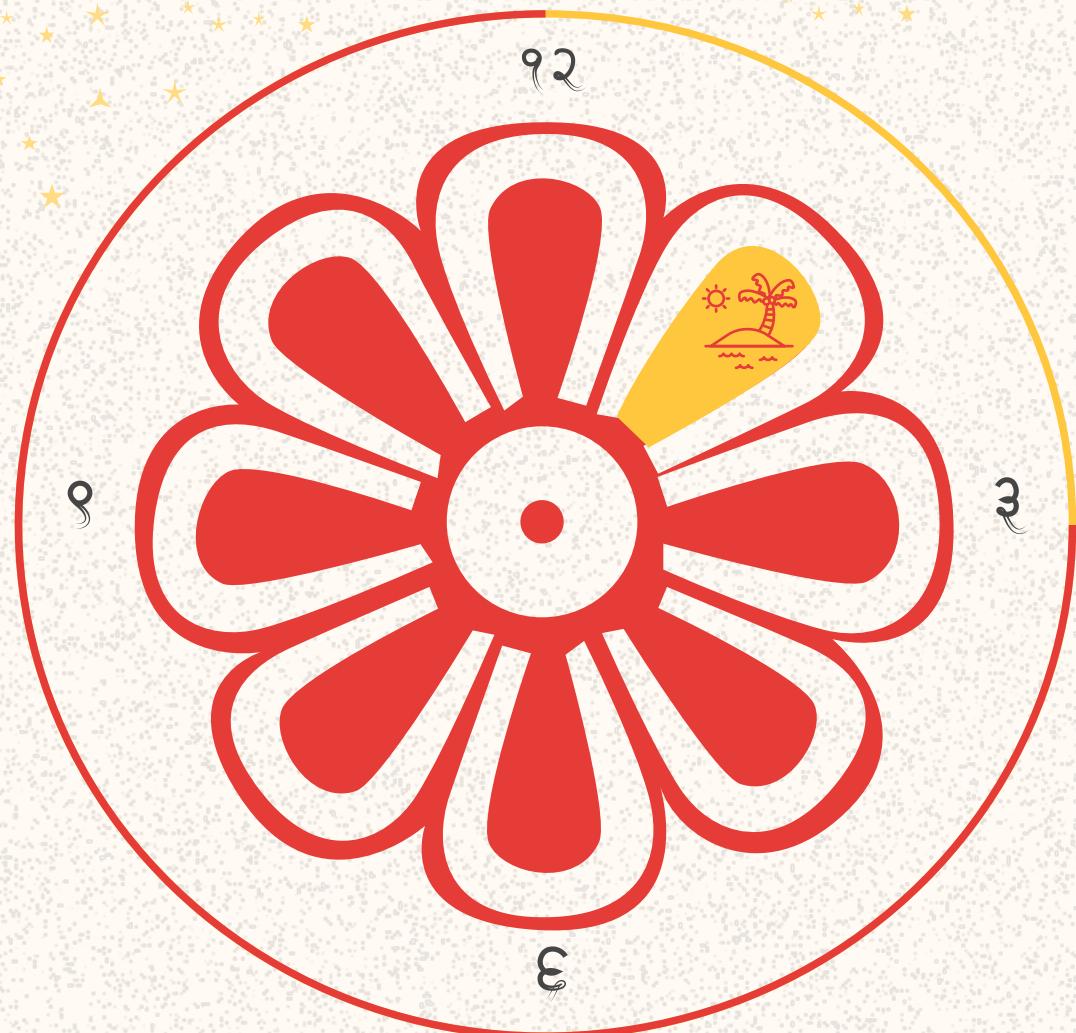
चर्चा के समय श्री जी के दोनों तरफ कुरान, हृदीस और भागवत का
रखना, धाम धनी परमधाम की शोभा का वर्णन कर ब्रह्म सृष्टियों को सुख दे
रहे हैं। रेहेलों पर धर्म ग्रंथ रखना, सुन्दरसाथ के लिए हमेशा पास में पैसे
रखना, श्री जी के आदेश से पैसे देना, जंगोटा हाथ रखने को और पंजा
खुजलाने को देना, कुरान का टीका सुनाना, अच्छी लिखावट में पत्र लिखकर
संदेश भेजना, एक साल का पूरा घटनाक्रम लिखना, सुन्दरसाथ जी द्वारा श्री
जी के मुखारबिंद से उतरी वाणी लिखना, फिर श्री जी को सुनाना, चर्चा में
स्थिर होकर बैठना, आने वाले सुन्दर साथ के लिए वाणी लिखना, छत्रसाल
जी को जागनी का उत्तरदायित्व सौंपना, वेद कतेब की साक्षियां देना, वाणी का
प्रवाह सागर की लहरों और तरंगों की तरह बहना, 40 प्रश्नों के उत्तरों से मग्न
होना, वेद कतेब का एकीकरण, मीठी रसना से मीठी वाणी सुनकर मोहित हो
जाना, मूल घर की याद दिलाना, ब्रज रास में इच्छा पूर्ण नहीं हुई तभी तीसरे
ब्रह्माण्ड में लाना, अपनी तीनों सूरतों का विवरण बताना, पांच दिन का
विवरण करना, कथामत के 7 निशान, 1100 साल का समय बताना,
4 वसियतनामें, सूर्य का पश्चिम की तरफ उगना, १२ यामा जी के स्वामित्व के
40 साल (विक्रम संवत् 1735 से 1775), एकाग्रचित्त होकर चर्चा सुनना, ज्यारह
बजे ढान, फिर भोजन, झीलना से पहले तेल लगाना, ऋतु के अनुसार जल
लाना, श्री जी का जल का लोटा भर कर सखियों पर फेंकना, वाणी लिखने
वाले हर समय तैयार रहते, भोजन के लिए श्री जी के हाथ धुलाना, पोंछना,
भोजन के समय बाई जी का पास बैठना, अपने घरों से भी कुछ-कुछ खाने को
लाना, गरम गरम रोटी लाना, बीच में जल की सेवा, कुल्ला करवाना, साथ ही
साथ सुन्दर साथ जी का चौपाइयां लिखना, गरम चने, दूध, दधि, श्रीखन्ड
प्रस्तुत करना, सभी को प्रसाद बांटना, भोजन के बाद ठमाल देना,

सुपारी देना, पान बीड़ा देना, बाईं जी का अपने हाथों से पान तैयार करना,
चलने पर छड़ी देना और पांवड़े बिछाना, सुन्दरसाथ के समूह के साथ घेर कर
श्री जी का चलना, मीठे स्वरों में वाणी गाते चलना, धनी जी का भी मीठे स्वरों
में वाणी गाना और सबको रिझाना, वाणी कभी रास लीला की, कभी ब्रज
लीला की तो कभी परमधाम की, अब पलंग पर तकिए रखना, बैठने के बाद
धनी जी द्वाया मधुर वाणी में जान चर्चा और चितवनी से सभी को आनन्दित
करना, लटकनी मटकनी चाल से पलंग पर बैठ जाना और बाईं जी का कोठा
मंदिर जाना, गायन की बाटी वाले हमेशा तत्पर रहते।

ਮੇਟੀ ਰਣਨੀ (9 ਬਜੇ ਸੇ 12 ਬਜੇ ਤਕ)

तीसरा प्रह्ल

(12 बजे से 3 बजे तक*)



कठे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें।
जोस इस्क हक मिलावटीं, सो फैल हाल के माहें॥

तीसरा प्रहृष्ट (12 बजे से 3 बजे तक)

सुंदरसाथ जी द्वारा तीसरे प्रहृष्ट में श्री जी के वचनों को दिल के कानों से सुनना, श्री जी को पहनाने के लिए सूथनी, गोटा, कनढप्पी देना, चरण दबाना, सुन्दरसाथ का श्री जी के सिर को प्यार से खुजलाना और उनका थपकी देना, विरह की वाणी गायन करना, धनी जी के चरणों में तन, मन, धन समर्पित करना, भजन गाकर हृदय में धनी के प्रति विरह पैदा करना, (वाणी मेरे पिझ की) बहुत मीठे स्वरों में गाना, इस प्रहृष्ट में सबको वाणी सुनने का अवसर मिलना, बाटी वालों का कभी चूकना नहीं, ब्रह्म वाणी की चौदह बारियां, अपने समय से पहले आ जाना, मुहम्मद साहिब द्वारा अक्षरातीत से सुने गये 90,000 हरफ सुनना, 30,000 हजार जाहिर करना, 30,000 का भेद पता न लगना, 30,000 का कुरान में अवतरित न होना, तारतम वाणी इसीलिए प्रगट हुई कि साटी सृष्टि को एक परब्रह्म पर अटूट विश्वास हो जाए, वाणी मंथन से धनी जी का दीदार होना, जीव सृष्टि को वाणी सुनने का स्वाद न आना, जीवों को दज्जाल द्वारा संसार के आकर्षण में फँसाना, दिल की आँखों और कानों के बिना वाणी का रस न आना, ब्रह्म मुनियों का वाणी गायन करना और सुनना, जोश (जबराईल) का इनको जबरूत तक ले जाना, और इनकी अन्तर्दीष्टि का 25 पक्षों में धूमना, धनी ने इनकी इच्छा पूर्ण करने के लिए ही खेल हुकम से बनवाया। मुहम्मद साहिब को संदेश वाहक बनाना, कुरान की वाणी न समझना, मोमिनों की महिमा का गायन करने वाली वाणी धनी जी की मेहर से आई और जिनके लिए आई उन्होंने ही हृदय में धारण की। अखण्ड धाम से पांच शक्तियों का आना, सत्त्वरूप से असराफील और जबराईल का आना।

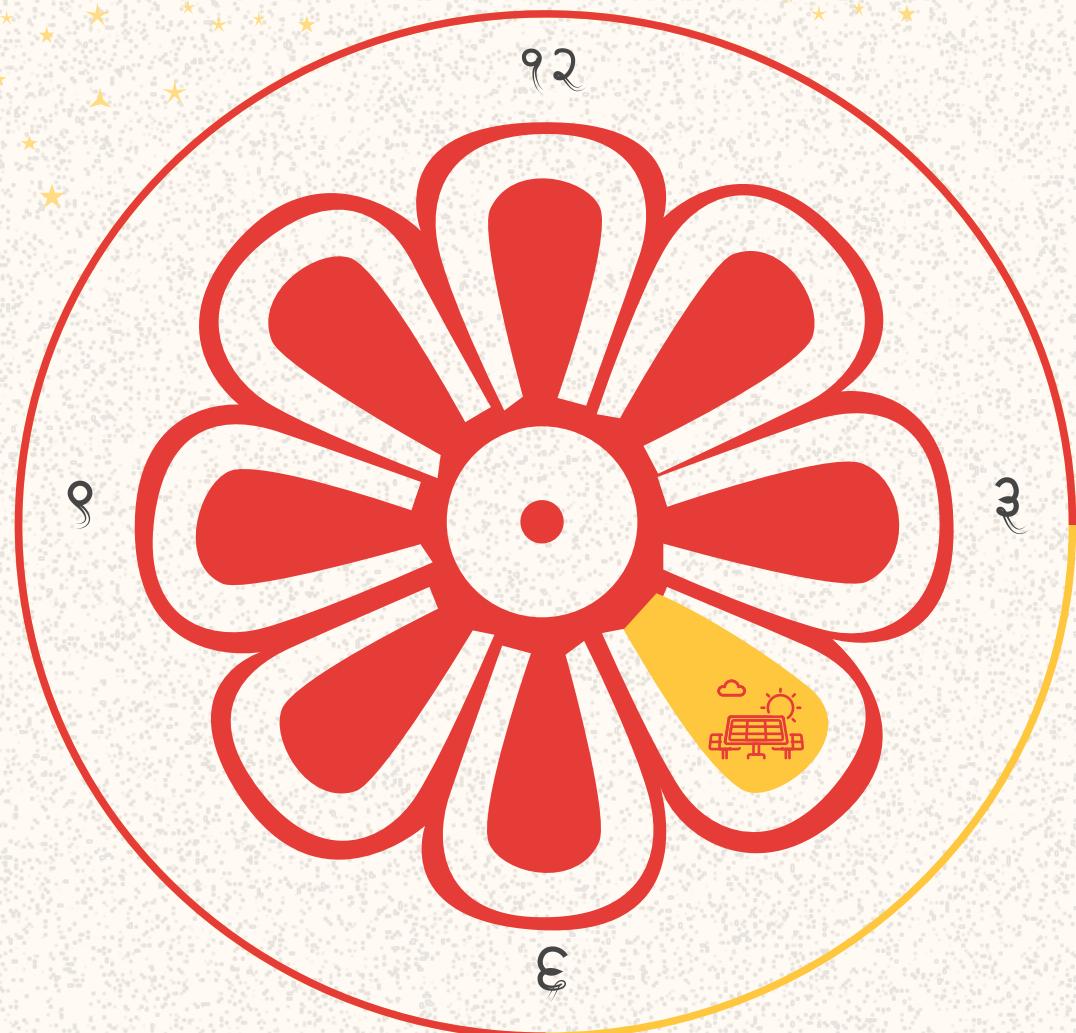
राज जी का आवेश, द्यामा जी की आत्मा और अक्षर ब्रह्म की आत्मा का परमधाम से आना, असराफील का सूर फूंकने के लिए पीठ टेढ़ी करके आदेश

की राह देखना, पाँचों शक्तियों का एक ही तन में समावेश और लीला करना,
यह सब मोमिनों के लिए और धर्म ग्रन्थों में भी इनकी महिमा, सभी साक्षियां
भी इन्हीं के लिए, क्यामत का दावा, मुदों को जीवित करना, धनी जी की मेहर
से परमधाम का सारा ज्ञान संसार में लाना, ब्रह्म सृष्टियों का सुनना और
अटूट इमान लाना।

ਮੇਟੀ ਰਣਨੀ (12 ਬਜੇ ਥੋ 3 ਬਜੇ ਤਕ)

चौथा प्रहर

(3 बजे से 6 बजे तक)



कटी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम।
रेहेनी नह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम॥

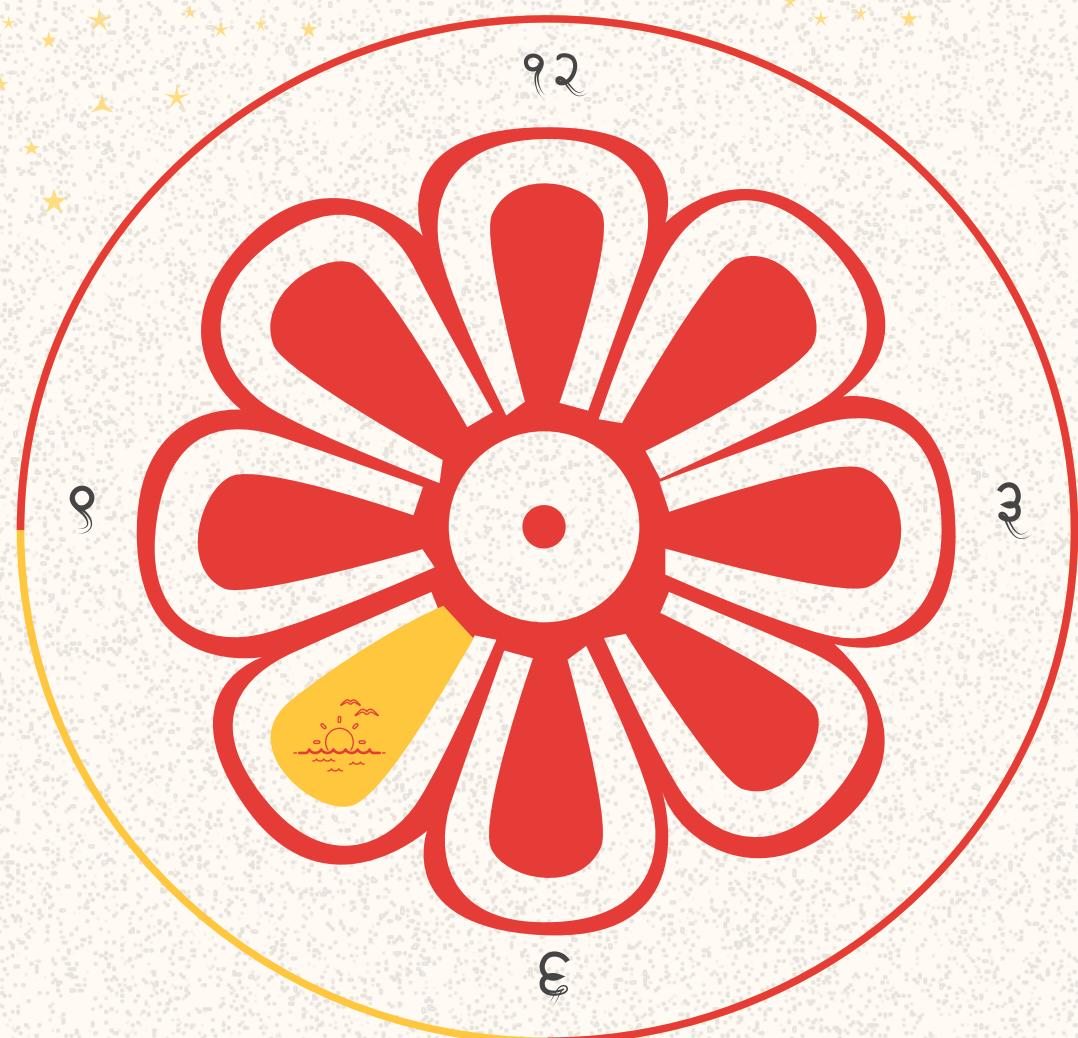
चौथा प्रहर (3 बजे से 6 बजे तक)

तीसरे प्रहर में पौढ़े से उठे, शैख्या से उठते ही जल ले आना, कंचन जड़ित
मोरछल ले आना, सुन्दर साथ का सेवा में तत्पर रहना, भाग भाग कर सेवा
करना, आधी बाजू का कुर्ता पहनाना, कस बाँधना, गोस पेंच रखना, (मुकुट
की शोभा के नीचे पट्टी), कमर में पटुका, कुर्ते के ऊपर चादर ओढ़ना,
मुखमली तकिए, सुन्दर तख्त, कुर्सी तथा सेज की सेवा, पांवड़े बिछाना, चन्द्रवा
बाँधना, सब सेवा में प्रेम ही प्रेम, श्री जी के बाल काटने की सेवा करना, गाढ़ी
तकिए ठीक ढंग से रखना, जल से चरण कमल धोना, ठमाल से पोंछना,
चरणमृत बांटना, हाथ धुलाना फिर पोंछना। लौंग, इलायची, जावित्री और
जायफल का काढ़ा देना, कुर्सी पर बैठे धनी जी को घेर कर बैठना, वाणी
गायन, कलंगी भेंट करना, छत्र धुमाना, हाथ पकड़ कर उठाना, तख्त सोने
चाँदी का, लिखने के लिए स्याही बनाना, श्री जी की चंचल चाल देखकर
मुस्कुराहट के झटने बहना। अब साढ़े चार बजे का समय है। चितवनी द्वारा
परमधाम चलने का विचार, क्योंकि इसी समय परमधाम से आए, सर्वोपरि
अमीरल मोमिन का आना, सुन्दर साथ अज्ञी करते हैं कि धनी खेल से शीघ्र
निकाल लीजिए, कोई इच्छा बाकी नहीं, प्रेम भरी पुकार को धनी जी का
सुनना और स्वीकार करना। माया में ही परमधाम के सुखों का अनुभव
कराना, चितवनी के समय ढाल, तलवार, धनुष बाण, बरछी लेकर खड़े रहना।
आभूषण पहनाना, दो मोतियों की माला, सोने का हार, सोने की दो जंजीरें,
नंगों से जड़े दो लॉकेट, चन्द्रहार, चंपकली का हार, सोने की कंठी (माला),
मोतियों की माला के नीचे मोती और ऊपर माणिक जड़े, चौकोट सोने में नंगों
से जड़ा आभूषण कंठ में शोभायमान, पाग के ऊपर चारों ओर चन्द्रिका, किनारे
पर मोती लटकते और हीरों की ज्योति जगमग, हाथों में पोंहोंची, पतली
अंगुरियों में मुंदरियां।

ਮੇਟੀ ਰਣਨੀ (3 ਬਜੇ ਸੇ 6 ਬਜੇ ਤਕ)

पांचवा प्रहर

(6 बजे से 9 बजे तक)



अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन।
ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन॥

पांचवा प्रहृत (6 बजे से 9 बजे तक)

श्रीजी का तख्त पर विराजमान होना, सुन्दरसाथ का पूछना, आज कौन घाट पधारना, उत्तर में पाट घाट बताना। बिछौना, गद्दा, चादर, ओढ़ने की चादर, मखमली तकिए, साथ वाले तख्त पर भी गादी बिछाना, दीपक जलाना। भोजन के लिए प्रेम भरे शब्दों से पूछना, थाल में कटोरियां सजाना, हाथ धुलाना, ठमाल से पोंछना, धनी जी को आरोगवाना और अपने मुख पर ठमाल बाँध लेना, श्री जी का प्रेम से आरोगना, हर प्रकार की सभी परोसना, आरोगने के समय भी मीठी बातें करना, वाणी गाकर इझाना, गाने वालों को प्रसाद रूप में एक कौर देना, सोने के कटोरे में जल ऋतु के अनुसार देना, पकवान, मिठाईयां, कुल्ला के बाद कहवा (काढ़ा), पानों का बीड़ा। फूलों के हार, कलंगी अपने हाथों से लेना, तुर्फ अपने हाथों से लगाना, चंवर मोरछल दोनों ओर, सुन्दर साथ की कुरान हवीस पढ़ने की इच्छा, चितवनी के समय गायन, भोग और संझा का गायन, युगल स्वरूप के वस्त्रों की शोभा का वर्णन, सिन्दुरिया साड़ी, द्याम रंग की कंचुकी, नीले व लाल रंग की आभा का पेटीकोट, पाग सिन्दुरिया, जामा सफेद, पिछौरी आसमानी, नीलो ना पीलो पटुका, इजार केसरी, नृत्य की बाटी वाली सखी की साड़ी द्याम रंग, कंचुकी आमरस, पांच पटे का पेटीकोट, नीले रंग की इजार, प्रातः और सायं इस अनुपम शोभा का वर्णन। अक्षरातीत की शोभा का वर्णन स्वयं ही करना, सुंदर साथ द्वारा हृदय के कानों से सुनना और पहचान करना, यह मूल सम्बन्ध से होना, संसार में डूबे हुए को अंधा कहना, मारिफत के भेद खुलने पर क्यामत का आना, आरती के समय सभी का दर्शन को आना, अक्षरातीत की आरती, झाँझ, ताल, चंवर मृदंग बजाना, गाने वाले सबसे आगे, दज्जाल का काँपना, कदमों में गादी बिछाना, चरणों में चावल, माथे पर तिलक और चावल, ठमाल रीथ कमल पर, चाँदी की आरती, 5 खन्ड (पाँच स्वरूप)

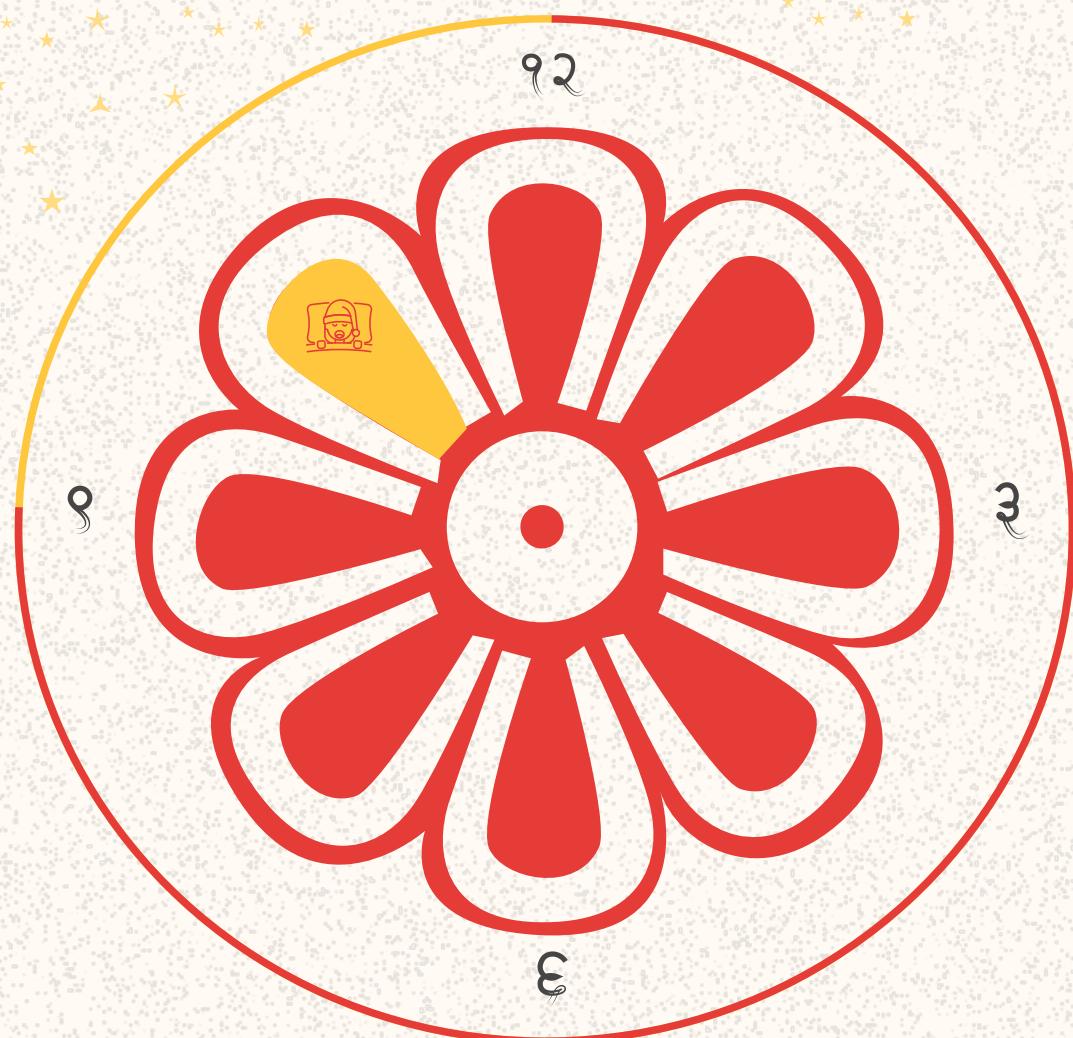
32 दीपक (32 हाँस का भाव), सोने के थाल में आरती सजाना, पहले बाईं जी का आरती करना, जय जय कार, तन, मन, जीव का न्यौछावर करना, थाल में श्री जी का पान बीड़ा रखना, सबको प्रसाद देना। एक प्रहृष्ट तक बंगलाजी में धनी जी को दिलाया जाना। संसार के जीवों को आदि नारायण का, अक्षर ब्रह्म की सुरताओं को अक्षर का, और अक्षर ब्रह्म के धाम का कुछ-कुछ पता है, पूर्ण पता नहीं है।

प्राणक्रान्थ जी ही धाम के धनी पूर्णब्रह्म अक्षरातीत, कतेब में जिनको आखिठल इमाम मुहम्मद में ही साहिबुज्जमा जिनके अन्दर इसा लह अल्लाह भी है, कहा गया है और वे ही सबकी इच्छा को पूर्ण करते हैं।

ਮੇਟੀ ਰਣਨੀ (6 ਬਜੇ ਥੋਂ 9 ਬਜੇ ਤਕ)

छठा प्रहर

(9 बजे से 12 बजे तक*)



कठे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें।
जोस इस्क हक मिलावटीं, सो फैल हाल के माहें॥



छठ प्रहर (9 बजे से 12 बजे तक)

स्वयं श्री जी का चर्चा करना। इस प्रहर में अटूट ईमान वालों का बैठना और सुनना, बंगलाजी दरबार में वाणी, कुरान और हवीस पढ़ना, स्वलीला अद्वैत के ज्ञान की अखण्ड वर्षा, नैन और कान वाणी सुनने में तल्लीन, धनी जी की मेहर से एकाग्र मन से सुनना। झाड़ की सेवा, दो लौंग, एक ठपया नित्य रसोई सेवा में, सेवा पूरी करके नित्य चर्चा सुनना, सावधानी और श्रद्धा से चर्चा का आनन्द, सुनें बिना शान्ति नहीं, खड़े होकर या दूर बैठकर चर्चा का रसपान। नवधा भक्ति करने वाले पुष्ट, प्रवाह और मयदा के भेद से 27 पक्ष। सत्, रज और तम के भेद से 81 पक्ष, 82वां पक्ष वल्लभाचार्य जी का, 83वां पक्ष अक्षर ब्रह्म की पाँच वासनाओं (बेहद मण्डल) का और 25 पक्ष परमधाम के।

इस प्रकार 108 पक्ष हुए। 25 पक्षों को ब्रह्म सृष्टियों के लिए कहना, रंग महल के नौ भोम दसवीं आकाशी, हौज कौसर ताल, कुंज निकुंज वन, माणिक पहाड़, जवेरों की नहरें, पूर्व में सात वन, पश्चिम की चौगान, बड़ोवन, मधुवन, महावन, पुखराज पहाड़, यमुना जी, आठ सागर, आठ जिमीं। युगल स्वरूप और सखियां तीनों का एक ही स्वरूप, प्रति दिन अक्षर ब्रह्म जी का दर्शन करने आना, अनादि काल से इक़़़ कर्ब का निर्णय करने के लिए धनी जी ने दिल में लिया और जागनी ब्रह्माण्ड में खेल दिखाकर तारतम वाणी के द्वारा इक़़ का निर्णय कर दिया। बंगलाजी दरबार में श्री महामति जी के मुख से कहना कि मैंने तीन बार मना किया, यह भी कहा कि मुझे पूर्णतया भूल जाओगी, बहस में मेरा कहना नहीं माना, खेल देखने की प्रबल इच्छा, उसे पूर्ण करने के लिए स्वप्न का खेल दिखाना, अक्षर ब्रह्म जी ने भी इच्छा की कि मैं भी देखूं धनी जी रंगमहल में कौन सी प्रेम लीला करते हैं, खेल श्री अक्षर ब्रह्म जी की इच्छा से बना, राज जी ने अखण्ड प्रकृति योगमाया बेहद मंडल को खेल बनाने का आदेश दिया, सखियों की खेल देखने की प्रबल इच्छा, मना करने पर और तीव्र

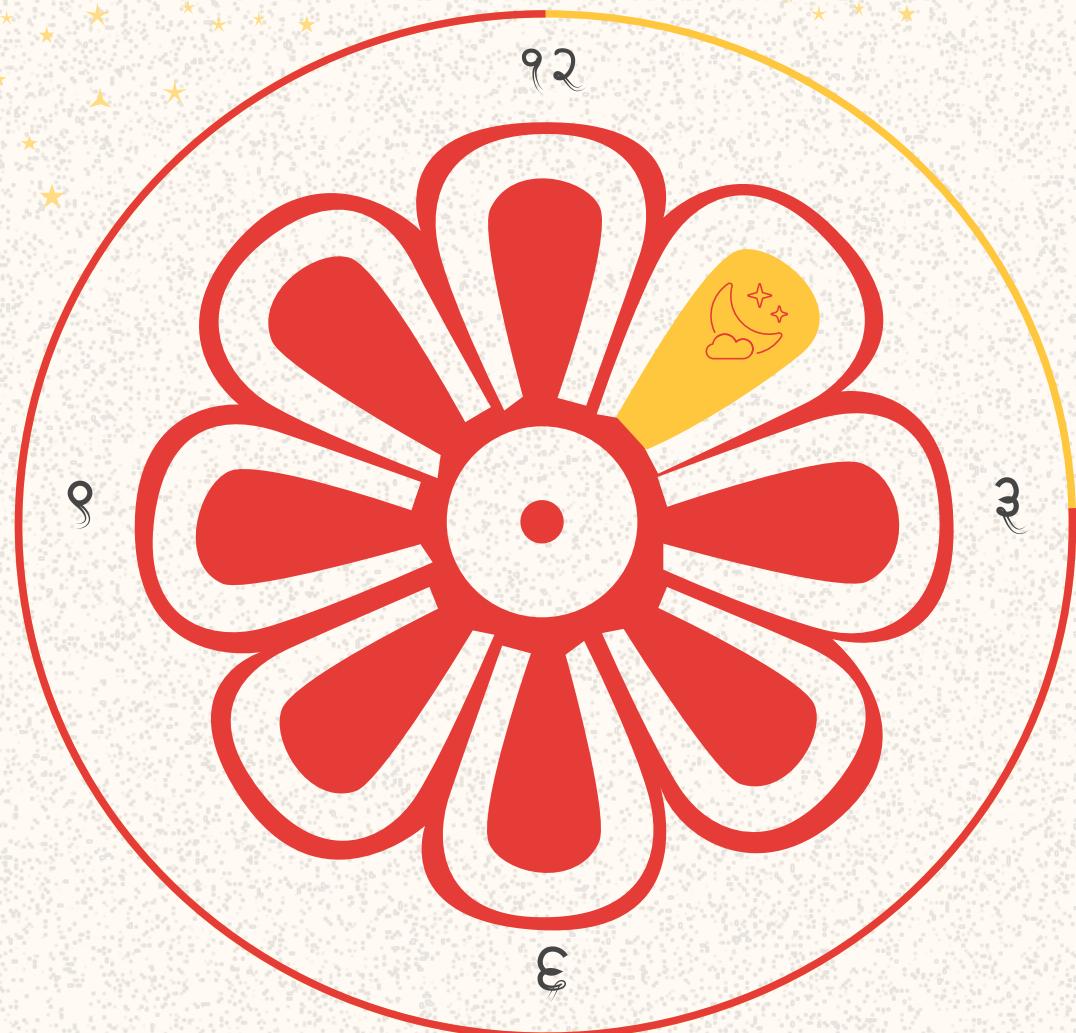
इच्छा, माया में उतारना पड़ा, काल माया के ब्रह्माण्ड में 11 साल 52 दिन तक एक ही जगह ब्रज में रखा ताकि खेल देख सकें, फिर नित्य वृन्दावन में एक रात्रि की महारास की लीला, इच्छा पूरी नहीं हुई तो जागनी ब्रह्माण्ड में तीसरी बार आना। मुहम्मद की तीन सूरतें, 11 वीं सदी में कयामत का प्रगटन, महामति जी के अन्दर ठहों के लिए पाँच शक्तियों का आना, राज जी का हुक्म इश्वरीय सृष्टि का समूह लेकर इस खेल में आया, जबराईल ठहों की वकालत करता है, जीव के हृदय को निर्मल रखता है, विकारों से दूर रखकर धनी जी के प्रेम की राह सरल करता है। असराफील के द्वारा ज्ञान का सूर पूंकना।

यामा जी दो तनों में आई और ठहों को खोज कर निकाल रही हैं, वाणी से राज जी का दीदार होना, दिल के कानों से सुन कर अनुभव करना, पुखराज की दो घाटियां (उत्तर, पश्चिम), दक्षिण की ओर महावन, पूर्व की ओर बंगला जी, अधबीच का कुंड, मूल कुंड और यमुना जी का प्रगटन, सातों घाटों में प्रेममयी क्रीड़ाएँ, यमुना जी के दोनों पुल (केल, बट), यमुना जी का 16 देहुरी के घाट से हौज कौसर में मिलना, मध्य में टापू महल, हौज कौसर को घेर कर पांच वृक्षों की शोभा। कुंज निकुंज वन, चौबीस हांस के महल, 24 गुर्ज, 24 फ़व्वारों की शोभा। माणिक पहाड़ के महलों की शोभा, माणिक पहाड़ की दो भूमिकाओं में हिंडोले, बड़ी हवेलियां (चौरस गोल), चार बड़े दरवाजे, घेर कर महानद, इसके किनारों पर घोहरियां, जवेटों की नहरें, वन की नहरें, छोटी रांग, बड़ी रांग, हवेलियों के मध्य सागर, सागरों के मध्य टापू महल, एक एक सागर में 12-12 हजार टापू महल। ऊंचाई भी 12-12 हजार भोम। बयान करते करते 3 बज जाते। चर्चा से परमधाम का अमृत उड़ेलते, अब श्री जी पलंग पर लेट जाते हैं।

ਮੇਟੀ ਰਣਨੀ (9 ਬਜੇ ਸੇ 12 ਬਜੇ ਤਕ)

सातवां प्रहृष्ट

रात्रि 12 बजे से 3 बजे तक



केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेट बका अर्स तन॥

सातवां प्रहृष्ट (रात्रि 12 बजे से 3 बजे तक)

चार प्रहृष्ट दिन के और दो प्रहृष्ट रात्रि के बीत गए। अब सातवां प्रहृष्ट रात्रि में 12 से 3 का चल रहा है। सोन्या को व्यवस्थित करना, दोनों पलंगों को व्यवस्थित किया जाना, बाईं जी का पलंग खाली रहना, पांच रुंग की निवार, कोमल गदा और चादर, सेज बन्ध के सुन्दर देशमी फुर्माक, चार डांडे ऊपर छत्री, सिरहाने गाल मसुरिये, छत्री के नीचे झालर, सुन्दर साथ का प्रार्थना करना कि विश्राम का समय हो गया, फिर से प्रार्थना करना, धनी जी धाम का वर्णन करने में आनन्दित, कोई प्रश्न पूछ ले तो उसके उत्तर में मीठी चर्चा, कोई आयत ले आए तो धनी जी का ध्यान पूर्वक सुनना, बार बार प्रार्थना कि बहुत दैर हो गई है आराम कीजिए, फिर भी चर्चा में लगे रहना, बाकी सब का मौन हो जाना, 12:45 या 1:30 का समय, प्रार्थना पर कहना कि अभी उठने वाला हूं। बाईं जी पीछे से संकेत करती हैं कि किताबें क्यों नहीं रख देते तो श्री जी उठने को तैयार। अब पांचवीं भोम रुंग परवाली मन्दिर में सुरता ले जाना, यहीं से सिखापन कि रात्रि को सोने से पहले युगल स्वरूप का ध्यान अवश्य करना चाहिए। वृत्त सुनाना, मध्य रात्रि का स्वरूप जिसमें संध्या से लेकर आधी रात रुंग परवाली में जाने तक की सारी लीला का वर्णन।

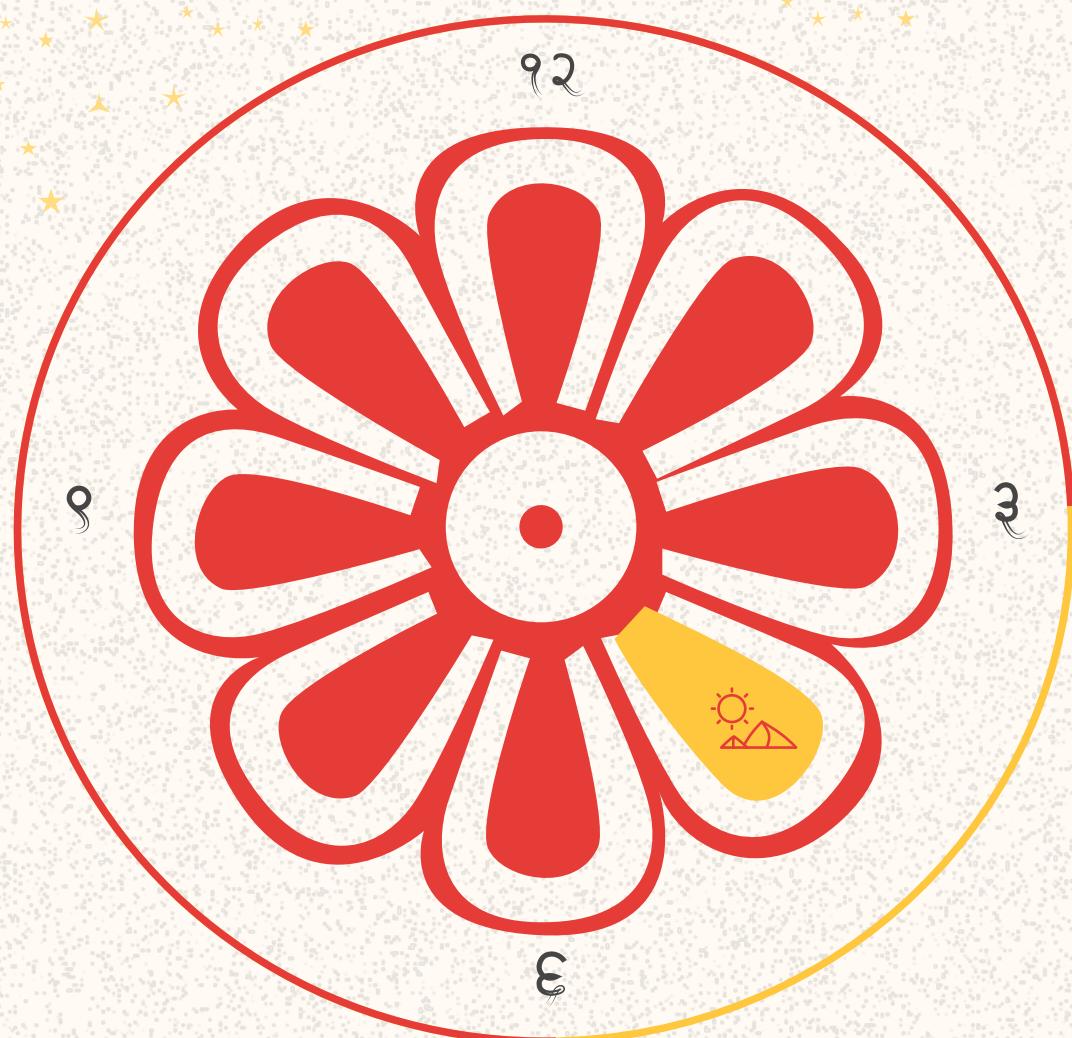
चलने पर पांचवड़े बिछाना, चलते समय मधुर स्वर में प्रेममयी बातें करना, प्रश्नों के उत्तर देना और विवादों का न्याय भी प्रेम पूर्वक करना, यह सब हँसते- हँसते ही होना, सुन्दरसाथ का श्री जी के चरणों में प्रणाम कर अपने बिछौनों पर जाना, सोने के लिए सबसे पहले जीव सृष्टि का उठना, धनी जी के सुनना, अंगीठी लाकर सेज और कपड़ों को तपाना, गाने वाले अपनी बाटी पर पहले से ही तैयार, 1:30 का समय हो गया, एकाग्र चित्त होकर धनी जी का वाणी सुनना पौढ़ने के समय शान्त वातावरण, कोई बैठा है, कोई सो रहा है,

कोई सुनी हुई चर्चा को दोहरा रहे हैं कोई कुरान हवीस पढ़ रहे हैं, वाणी और अन्य ग्रन्थों की चर्चा। श्री जी पूछते हैं कि कौन कौन बैठा है? कभी दस, बीस, तीस और कभी सौ से भी ऊपर बैठे होते हैं। धनी जी रीझ कर कभी अपना हार, कभी कलंगी प्रसाद के ऊपर में देते, सभी में प्रसादी बांटना, जो चर्चा श्रीजी से सुनी होती है वो ही सुन्दरसाथ सुनते भी हैं और सुनाते भी हैं। यह सब देख कर धनी जी बहुत प्रसन्न होते हैं।

ਮेरੀ ਰਣਨੀ (ਰਾਤ੍ਰਿ 12 ਬਜੇ ਦੋਵਾਂ ਥੀਏ ਤੋਂ 3 ਬਜੇ ਤਕ)

आठवां प्रहर

रात्रि 3 बजे से सुबह 6 बजे तक



जिन केहेनी किल्लीय से, खुल्या भिस्त का द्वारा।
सो केहेनी छुड़ाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सारा॥



आठवां प्रहृष्ट (रात्रि 3 बजे से सुबह 6 बजे तक)

इस समय धाम धनी जी पलंग पर लेटे हैं। गायन वाले सुन्दरसाथ अपनी बाटी का मधुर गान करने का अवसर नहीं खोते। यह वाणी चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने वाली, जिसकी आज तक किसी को पहचान नहीं थी। त्रिगुन भी इसको सुनने की शक्ति नहीं रखते। श्री जी के हृदय में वाणी का रस सागर की तरह उमड़ना, और ब्रह्म सृष्टियों का रसपान करना। जीव सृष्टि धारण ही नहीं करेगी। जीवों को यह भी नहीं पता कि तन छोड़ने के बाद कहाँ पहुंचेंगे? ब्रह्म वाणी ही इस स्तर तक पहुंचाती है, यदि समझ आ जाए तो एक पल भी माया में नहीं ठकेंगे, जो भी श्री जी के चरणों में आ गया वो श्रद्धा पूर्वक चर्चा के रस का आनन्द लेता, वाणी आत्मिक दृष्टि खोल कर परमधाम के 25 पक्षों में विचरण कराती, यह वाणी द्यामाजी की रसना है और धनी जी के हृदय का बहता हुआ रस है। अक्षर ब्रह्म भी परमधाम के अन्दर की लीला को नहीं जानते, इस लिए त्रिदेव कैसे जानेंगे, और स्वप्नमयी संसार के जीवों तक कैसे पहुंच सकती है। जो जीव कठिन तप करते हैं उनकी दृष्टि तो परमधाम में और अक्षर धाम में घूमने लगती है। इस वाणी की कृपा से जीव यमुना जी के सातों घाटों का दीदार कर लेता है। जबराईल सत्त्वरूप से आगे नहीं जा सकता, मुहूर्मुद साहिब भी इक के तथ्य पर बैठ कर ही पिया का दीदार कर सके, ज्ञान दृष्टि से ही आत्म दृष्टि परमधाम तक जाती है तो आत्म जागृति का सवेदा होता है। वाणी से ही अखण्ड बहिर्भूतों की प्राप्ति होती है।

सुन्दरसाथ अखण्ड धाम और युगल स्वरूप को देखते हैं और दूसरों को दिखाने की राह पर ले जाते हैं। कोई संशय नहीं रह जाता और धनी के सामने अपने को पाते हैं। मूल सम्बन्ध से ही यह प्राप्त होता है। यह प्रकाश चौदह लोकों में फैलकर त्रिदेव के पास पहुंच जायेगा, अक्षर ब्रह्म की नींद समाप्त होगी तो इस लीला को याद करेंगे, सत्त्वरूप की दोनों बहिर्भूतों के साथ आठों बहिर्भूतें अखण्ड

हो जायेंगी।

तारतम् ज्ञान के द्वारा नौ भोम दसवीं आकाशी, हौज कौसर, यमुना जी, फूल बाग, नूर बाग, सात घाट, दोनों पुल, माणिक पहाड़, 24 हांस का महल, पुखराज पहाड़, घेर कर छोटी रांग, बड़ी रांग, सागरों के मध्य टापू महल, श्री जी की चर्चा को दोहराना, श्री जी का लेटे लेटे सुनकर आंखों में नींद न आना, आगे पीछे शब्द बोलने पर श्री जी का टोकना, सुनकर सुन्दर साथ का चुप हो जाना और कहना कि याद नहीं हुआ तो हमसे भूल हो गई। प्रातः काल के 4:30 का समय हो गया, स्वरूप पढ़ कर सभी को प्रणाम करना, मंगल आरती के बाद वृत्त का वर्णन, 25 पक्षों के वर्णन को वृत्त या चर्चनी कहते हैं।

विक्रम संवत् 1745 तक चर्चनी की उमंग धीरे धीरे कम होती गई, फिर कोई चाहत ही नहीं रही, कर्म काण्ड की प्रधानता, चर्चनी नाम मात्र। श्री जी को काढ़ा देना, साथ साथ 25 पक्षों का वर्णन सुनाना और अपनी पहचान भी कराना, वृत्त सुनाने वालों की सेवा करना, रंग महल के चारों ओर चांदनी चौक, बट पीपल की चौकी, फूल बाग, नूर बाग, लाल चबूतरा, ताड़वन, रंग महल के अन्दर चार चौरस हवेलियों को पार करके पांचवीं गोल हवेली मूल मिलावा, गोल चबूतरा, घेर कर 64 थम्भ, नीचे गिलम ऊपर चन्द्रवा, मध्य में कंचन रंग का सिंहासन, उस पर युगल स्वरूप विराजमान, चारों ओर सुन्दरसाथ, वर्ष आभूषणों की शोभा, दूसरी भोम भुलवनी, तीसरी पड़साल, चौथी नृत्य की हवेली, पांचवीं में शयन लीला, छठी भोम सुखपाल, सातवीं-आठवीं में हिंडोले, नवमी भोम देहलानें, यहां पर जब पूर्व में बैठें तो यमुना जी, सात घाट, अक्षर धाम, दक्षिण में बट पीपल की चौकी, हौज कौसर, 24 हांस का महल, माणिक पहाड़ में चौरस गोल हवेलियां, घेर कर आये बड़े हिंडोले, वन की नहरें, उत्तर दिशा में पुखराज पहाड़, सबको घेर कर छोटी रांग, बड़ी रांग,

सागरों में टापू महल। नवमी भोम से दसवीं आकाशी। पुनः पहली भोम में मूल
मिलावे में युगल स्वरूप के सन्मुख सभी ब्रह्म अंगनाएं, अब चार चौरस
हवेलियों को पार कर मुख्य द्वार से चांदनी चौक, यहां दो चबूतरे, लाल-हरा
वृक्ष, यमुना जी मूल कुंड से निकली, आधी ढपी, आधी खुली चलकर हौज
कौसर में मिली, ताल के टापू महल, चारों ओर वन, पश्चिम में अन्न वन, दूब
दूलीचा, पश्चिम की चौगान, उत्तर में लाल चबूतरा, ताड़वन, खड़ोकली, बड़ोवन,
मधुवन, महावन, पुखराज का हजार हांस का चबूतरा, घेर कर हजार गुर्ज।

5 पेड़ खजाने के ताल से, उत्तर पश्चिम दो घाटियां और पुखराजी ताल (ये सब
पुखराज के आठ पेड़ कहलाते)। केल पुल और बट पुल के बीच सात घाट।
कुंज निकुंज वन की शोभा इत्यादि। शाम के तीन बजे नीले पीले मंदिर से
उठते हैं तो द्यामा जी से कहते हैं, पूछो आज कौन घाट जाना है? इक़ रब्द के
बढ़ने से आज ही धनी जी ने दिल में ले लिया कि इन्हें अपने चरणों में बिठा
कर माया का खेल दिखाऊँगा, इक़ रब्द ही खेल दिखाने का मुख्य कारण,
ब्रज- रास के बाद जागनी ब्रह्माण्ड, फिर सातवें दिन की लीला, सब पहले से
ही धनी ने दिल में ले रखा है, उसी अनुसार चल रहा है। अक्षर ब्रह्म के अन्दर
भी परमधाम की लीला देखने की इच्छा प्रगट, ॥ वर्ष 52 दिन ब्रज लीला के
पश्चात योग माया में एक रात्रि की महारास लीला, वापिस परमधाम, इच्छा पूरी
न होना, पुनः तीसरे ब्रह्माण्ड में आना, रास के बाद आत्म अक्षर के साथ धनी
जी का जोश, 63 वर्ष तक लीला और कुरान का ज्ञान दिया, द्यामा जी दसवीं
सदी में पूरी जमात के साथ आई, 313 आत्माएं मिलीं, चर्चनी का विस्तार तो
बहुत है पर संक्षेप में बताया, वृत्त सुनते सुनते प्रातः काल हो गया।

सेवादार सुन्दर साथ तत्पर, श्री प्राणनाथ जी को साक्षात् अक्षरातीत मान कर आठों प्रहृष्ट रिझाते, अब उन्होंने बाह्य रूप से अपनी लीला को छिपा लिया, अब ब्रह्म आत्माओं के हृदय में बैठ कर स्वयं ही जागनी लीला कर रहे हैं। थोभा
सुन्दरसाथ को दे रहे हैं।

“प्रेम प्रणाम जी”

ਮੇਟੀ ਰਹਨੀ (ਰਾਤ੍ਰਿ 3 ਬਜੇ ਸੇ ਸੁਵਹੁ 6 ਬਜੇ ਤਕ)



हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद!



f [shriPrannathJiVani](#)

► [Shri Prannath Ji Vani](#)

✉ shriprannathjivani@gmail.com

